

दशमः पाठः



अशोकवनिका

[प्रस्तुत पाठ आदिकवि वाल्मीकिकृत रामायण के सुन्दरकाण्ड के पन्द्रहवें सर्ग से संगृहीत है। सीता की खोज में हनुमान लङ्का में प्रविष्ट होते हैं तथा वहीं रावण के प्रसिद्ध उद्यान अशोक-वनिका की शोभा का आह्लादक दर्शन करते हैं। यह अशोकवनिका दिव्य/अद्वितीय सौरभ, स्वाद, सौन्दर्य एवं विविध वर्णों से युक्त कुसुमों, लताओं वृक्षों आदि से सुभोभित है। इसी का वर्णन प्रस्तुत पाठ में है।]

सर्वनाम, तत्, एतत्-प्रयोगः

सर्वर्तुकुसुमै रम्यैः फलवद्भिश्च पादपैः।

पुष्पितानामशोकानां श्रिया सूर्योदयप्रभाम् ॥1॥

कर्णिकारैः कुसुमितैः किंशुकैश्च सुपुष्पितैः।

स देशः प्रभया तेषां प्रदीप्त इव सर्वतः ॥2॥

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा।

विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः ॥3॥

नन्दनं विबुधोद्यानं चित्रं चैत्ररथं यथा।

अतिवृत्तमिवाचिन्त्यं दिव्यं रम्यश्रियावृतम् ॥4॥

सर्वर्तुपुष्पैर्निचितं पादपैर्मधुगन्धिभिः।

नानानिनादैरुद्यानं रम्यं मृगगणद्विजैः ॥5॥

अनेकगन्धप्रवहं पुण्यगन्धं मनोहरम्।

शैलेन्द्रमिव गन्धाढ्यं द्वितीयं गन्धमादनम् ॥6॥

अशोकवनिकायां तु तस्यां वानरपुंगवः।

स ददर्शाविदूरस्थं चैत्यप्रासादमूर्जितम् ॥7॥



सर्वर्तुकुसुमैः (सर्व+ऋतुकुसुमैः)	- सभी ऋतुओं के फूलों से
पादपैः	- वृक्षों से
सूर्योदयप्रभाम् (सूर्य+उदयप्रभाम्)	- सूर्योदय की छटा
श्रिया	- शोभा से
कर्णिकारैः	- कनेर के फूलों से
किंशुकैः	- टेसू/पलाश के फूलों/पेड़ों से
प्रभया	- छटा से
पुंनागा	- सफेद कमल/नागकेसर नाम का वृक्ष।
सप्तपर्णाश्चः (सप्तपर्णाः+च)	- और 'सप्तपर्ण' नाम का एक वृक्ष छितवन
चम्पकोद्दालकाः (चम्पक+उद्दालकाः)	- चम्पा एवं उद्दालक नामक पौधा/फूल
विबुधोद्यानम् (विबुध+उद्यानम्)	- देवताओं का उद्यान
चैत्ररथम्	- कुबेर के उद्यान का नाम
नन्दनम्	- स्वर्ग का उद्यान
नानानिनादैः	- अनेक प्रकार की ध्वनियों से
मृगगणद्विजैः	- पशुओं एवं चिड़ियों से



पुण्यगन्धम्	-	पवित्र/शुद्ध गन्ध वाला
शैलेन्द्रम् (शैल+इन्द्रम्)	-	पहाड़ों का राजा (हिमालय)
गन्धमादनम्	-	'गन्धमादन' नाम का एक पहाड़
अशोकवनिकायाम्	-	अशोक वनिका में
वानरपुंगवः	-	बन्दरों में श्रेष्ठ (हनुमान)
ऊर्जितम्	-	चकाचौंध से युक्त

अभ्यासः



1. अधोलिखितानि पदानि उच्चारयत-

सर्वर्तुकुसुमैः	सर्वर्तुपुष्पैः	कर्णिकारैः
मृगगणद्विजैः	फलवद्भिश्च	पादपैर्मधुगन्धिभिः
सप्तपर्णाश्च	चम्पकोद्दालकाः	विबुधोद्यानम्
ददर्शाविदूरस्थम्	प्रासादमूर्जितम्	किंशुकैश्च

2. पाठान्तर्गतान् सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।

3. श्लोकेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अशोक तु तस्यां वानर

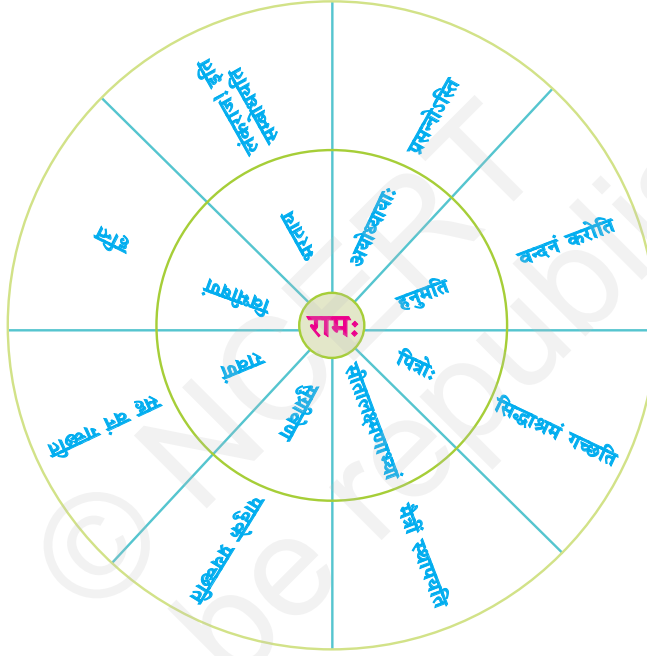
स ददर्शाविदूरस्थं प्रासादमूर्जितम्॥

(ख) कर्णिकारैः किंशुकैश्च

स देशः तेषां प्रदीप्त इव

- (ग) वानरपुंगवः किं ददर्श?
 (घ) अत्र वानरपुङ्गवः कः?
 (ङ) उद्यानम् कैः निनादैः रम्यम्?

7. चक्रस्थपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



यथा-रामः सीतालक्ष्मणाभ्यां सह वनं गच्छति।

- (क) रामः।
 (ख)।
 (ग)।
 (घ)।
 (ङ)।
 (च)।
 (छ)।

8. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एताम् एषा एते एतानि एषः एताः

यथा- अध्ययने एषः बालः अद्वितीयः अस्ति।

(क) बाला विद्यालयात् गृहं गच्छति।

(ख) उद्याने पुष्पाणि विकसितानि सन्ति।

(ग) पिता लेखनीं मह्यम् आपणात् आनयत्।

(घ) अहम् फले तुभ्यं ददामि।

(ङ) बालिकाः मधुराणि गीतानि गायन्ति।

योग्यता-विस्तारः

ग्रन्थ परिचय-‘रामायण’ केवल लौकिक संस्कृत का ही नहीं अपितु विश्व का आदि काव्य है। ‘रामायणम् आदिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।’ इसमें सात काण्ड हैं तथा यह चौबीस हजार श्लोकों से युक्त है। ‘चतुर्विंश सहस्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः।’

* रामायण का सबसे अच्छा काण्ड सुन्दरकाण्ड माना जाता है। कई प्रदेशों में इस काण्ड के नियमित पाठ की परम्परा है। सुन्दरकाण्ड के विषय में एक लोक प्रचलित कथन प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है-

सुन्दरे सुन्दरो रामः सुन्दरे सुन्दरी कथा।

सुन्दरे सुन्दरी सीता सुन्दरे किं न सुन्दरम्।

* अशोक-वनिका दशानन रावण का उद्यान था जिसमें अपहरण के बाद सीता को छिपा कर रखा गया था।

परियोजना-कार्यम्

भारतवर्ष के कुछ प्रसिद्ध बागों अथवा उद्यानों की सूची बनाएँ, यथा-शालीमार एवं निशात।

